आज मीरा बाई होती तो ये भजन गाती

खायो जी मैने दाल रतन धन खायो
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु।
कृपा कर अपनायो॥

जन्म जन्म की पूंजी गँवाई
पड़ोसी ईर्ष्या से भर आयो
खायो जी मैने दाल रतन धन खायो

भाव रोज ऊँचे, हर कोई लूटे, दिन दिन बढ़त सवायो॥

दाल की राजनीति खेवटिया काला बजारिया
जो पायो वो बौरायो

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर।
दाल खाई के खूब इठलायो॥
मूल भजन ये है
पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु।
कृपा कर अपनायो॥

जन्म जन्म की पूंजी पाई।
जग में सबी खुमायो॥

खर्च ना खूटे, चोर ना लूटे।
दिन दिन बढ़त सवायो॥

सत की नाव खेवटिया सतगुरु।
भवसागर तरवयो॥

मीरा के प्रभु गिरिधर नगर।

हर्ष हर्ष जस गायो ॥